Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

# गोदान : स्त्री विश्लेषण

**सुरज्ञान चौधरी**

नेट, जे.आर.एफ.
एम.ए. (हिन्दी साहित्य)

**शोध – संक्षेप :**

प्रेमचन्द आदर्शोमुखी, यर्थाथवादी उपन्यासकार रहे है। प्रेमचन्द के साहित्य का मूल स्वर समाज सुधार है। कला का कार्य मनोरंजन नहीं सामाजिक सोद्देश्यता है, यही सूत्र इनके लेखन का आधार है। 1936 ई. में प्रकाशित गोदान उपन्यास को महाउपन्यास कहे तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। क्योंकि प्रेमचन्द ने इसमें भारतीय जनमानस की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक परिस्थितियों के साथ–साथ नारी जीवन की समस्याओं को भी उकेरा है।

मूलतः गोदान कृषक जीवन की महाकाव्यात्मक त्रासदी माना जाता है लेकिन इसमें मुंशी जी ने सामाजिक कढ़ियों, अंधविश्वासों के बंधन में छटपटाती नारी की मार्मिक वेदना का भी चित्रण किया है। उपन्यास का जब भी हम अध्ययन करते हैं तो स्वयं को भूलकर हम इसके पात्रों के साथ सामजस्य में इनके सुख दुःख स्वयं के बन जाते है।

मध्यमवर्गीय कृषक जीवन में होरी उपन्यास में मुख्य नायक है तो वही धनिया (होरी की पत्नी) नायिका के रूप में सामने आती है। दोनों को एक दूसरे का सहारा बनाकर दिखाया है। प्रेमचन्द ने स्वयं स्त्री को जागृत करते हुए दिखाया है। उनका मानना है कि नारी अपने अधिकारों की रक्षा स्वयं करेगी तभी वह इस समाज में जी पायेगी। वर्षों पूर्व प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में नारी जागरण का जो आह्वान किया वो आज भी प्रासंगिक बना हुआ है।

गोदान में धनिया, गोविन्दी पात्रों के माध्यम से प्रेमचन्द ने महिलाओं का परिवार प्रेम, कर्तव्यों के प्रति जो समर्पण दिखाया है उस समय की परिस्थितियों को दर्शाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रेमचन्द द्वारा रचित गोदान में स्त्री पात्रों के जीवन का अवलोकन किया है।

**प्रस्तावना :**

**प्रमुख स्त्री पात्र**

धनिया : होरी का पत्नी, नायिका, स्वाभिमानी व निडर।
झुनिया : होरी की पुत्रवधु, गोबर की पत्नी।
मालती : मेहता की पत्नी, आधुनिक स्त्री डॉक्टर।
सरोज : मालती की छोटी बहिन।
गोविन्दी : खन्ना साहब की पत्नी, आदर्श भारतीय नारी।
सोना : होरी की पुत्री।
रूपा : होरी की पुत्री।
दुलारी सहुआइन : दुकान की मालकिन।

प्रेमचन्द कृत गोदान में धनिया नारी का चित्रण अत्यन्त स्वाभाविक व सुझ–बूझ से भरा हुआ है। धनिया के चरित्र के रूप में प्रेमचन्द जी ने ग्रामीण नारी जीवन को सामने रखा है। धनिया होरी की पत्नी है जो एक सशक्त मजबूत मेहनती महिला है। वह आजीवन अपने परिवार के लिए संघर्ष करती है।

धनिया का अपने पति के प्रति समर्पण भाव, अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियों में अडिग रहना, भारतीय समाज की महिला के चरित्र को उद्धारित करता है। धनिया अपने प्रगतिशील विचारों की वजह से होरी की अनेक दुर्बलताओं को छिपा लेती है क्योंकि उसे होरी से अटूट प्रेम है और वे दोनों प्रेम के पुजारी है। धनिया शोषण के खिलाफ विद्रोह भी करती है। प्रेमचन्द के साहित्य का मूल स्वर नारी मुक्ति भी है जिसका समर्थन शम्भुनाथ सिंह ने किया है – ''प्रायः सभी उपन्यासों व कहानियों में प्रेमचन्द ने सामाजिक कुप्रथाओं पर चोट की और नारी मुक्ति की आवाज़ भी उठायी वह सिर्फ समाज सुधार में विश्वास नहीं करते।''[1]

जिस प्रकार भारतीय समाज में महिलाऐं अपने पति को परमेश्वर मानती है, उसके लिए पूजा किया करती है, धनिया का भी यही रूप सामने आता है। गोपाल कृष्ण गोखले धनिया के बारे में लिखते है – धनिया होरी की शीतल छाया है वह चाहे प्रसन्न हो या अप्रसन्न, होरी से चाहे उसका मत मिलता हो या न मिलता हो पर हर स्थिति में वह भारतीय पत्नी का आदर्श प्रस्तुत करती है।'' साहित्य की सृष्टि मानव समुदाय को आगे बढ़ाने, उठाने के वास्ते ही तो है।[2]

गोदान की धनिया सशक्त, निडर और धैर्यवान स्त्री है यथा संभव विरोध व विद्रोह का साहस रखती है। उपन्यास में होरी जब दरोगा जी से डरकर रिश्वत देने के लिए रूपये उधार लाता है तो वह शेरनी की तरह उन रूपयों को झपटा मारकर ले लेती है। कहती है –

'यह रूपये कहां से लिये जा रहे हैं बता? भला चाहता है तो सब रूपये लोटा दे नहीं कहे देती हूँ।' ..... होरी जब इज्जत की बात करता है तो वह कहती है – ऐसी बड़ी है तेरी इज्जत जिसके घर में चूहे लोटे, वह भी इज्जत वाला है। दरोगा तलाशी ही तो लेगा, ले लेगा तलाशी। एक तो सौ रूपये की गाय गयी उस पर वह पलेथन। होरी आश्चर्य चकित होता है धनिया का यह रूप आज उसने पहली बार देखा था।[3] उपन्यास में यह दिखाया गया है कि जब–जब भी होरी कमज़ोर पड़ा है वहां धनिया एक सफल महिला के रूप में सामने आती है।

धनिया एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार की पात्र है जो परिवार की खुशी के लिए दिन रात जी–जान से प्रयास करती है। जहाँ एक तरफ ग्रामीण समाज में कृषक वर्ग लड़ते–लड़ते खत्म हो जाता है वहीं उनकी औरते हर परिस्थिति में हिम्मत नहीं हारती वह हर हाल में संतुष्ट रहती है। गोदान में एक जगह धनिया पति की मृत्यु पर सामाजिक दायित्व को निभाती हुई दिखाई देती है। ''महाराज घर न गाय है न बछिया न पैसा यही पैसे है यही इनका गोदान है।''[4]

इसी उपन्यास में नारी पात्र झुनिया सामाजिक बन्धनों को ठुकराते हुए गोबर से विवाह कर लेती है और होरी के घर आकर रहने लग जाती है। वहाँ पर वह गोबर द्वारा किये गये अत्याचार को सहन करते हुए जीवन जीती है। हड़ताल में गोबर के घायल होने पर झुनिया ही तन मन से उसकी सेवा करके स्वस्थ करती है। झुनिया की यह प्रवृत्ति प्रायः भारतीय मध्यमवर्गीय समाज की महिला चरित्र की विशेषता है। झुनिया को लेखक ने पुरूष से ज्यादा हिम्मवाली व सशक्त पात्र के रूप में दिखाया है।

उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने महिलाओं को शिक्षित होने, जागृत होने पर भी जोर दिया है। प्रेमचन्द ने शिवरानी देवी से वार्तालाप करते हुए महिलाओं के शिक्षित होने पर कहा है – ''जब तक महिलाऐं शिक्षित नहीं होगी। सब कानूनी अधिकार उनको बराबर नहीं मिल जायेंगे तब तक महज काम करने से काम नहीं चलेगा।''[5] झुनिया एक विधवा पात्र के रूप में सामने आती है। गोबर से विवाह करवाने के पीछे प्रेमचन्द का उद्देश्य तत्कालीन

व आधुनिक समाज की विधवा विवाह के प्रति कुंठित मानसिकता को उजागर करना है। प्रेमचन्द स्वयं विधवा विवाह के पक्षधर थे। उपन्यास में झुनिया का गोर से विवाह करने पर समाज बिरादरी में रखने के लिए दण्ड का प्रावधान करता है। दण्ड नहीं भरने पर बिरादरी से बाहर किया जायेगा। यहाँ धनिया झुनिया को शरण देती है और समाज के दण्ड का विरोध करती है। धनिया द्वारा झुनिया को शरण देना एक माँ के ममत्व को उजागर करना है तथा बिरादरी जैसी प्रवृत्तियों का विद्रोह धनिया द्वारा करवाकर प्रेमचन्द जी ने यह स्पष्ट करना चाहा है कि एक महिला अपने परिवार की हर तरफ से रक्षा कवच बनती है। समाज द्वारा बिरादरी से बाहर करने का विरोध करती हुई धनियां कहती है –

''बिरादरी में रहकर हमारी मुक्त नहीं हो पाएगी अब भी अपने पसीने की कमाई खाते हैं तब भी अपने पसीने की कमाई खांएगें।''[6]

भोला मेहमान के रूप में धनिया के घर आता है तो धनिया जो मेहमानवाजी करती है वह भारतीय समाज में पायी जाने वाली परम्परा है जिसको प्रेमचन्द जी ने उपन्यास में चित्रित किया है। धनिया का भोला की आवभगत करना उसके सरल व दयालु हृदय का परिचायक है।

भारतीय सामाजिक परम्परा में मेहमान को भगवान का रूप माना गया है। उपन्यास में भी यही भावना दिखाकर प्रेमचन्द ने यह दिखाया है कि वे समाज से हृदय से जुड़े हुए थे।

गोदान में मालती आधुनिक शिक्षित महिला का प्रतीक है। जो पाश्चात्य युग की नारी के रूप में सामने आती है। वह एक डॉक्टर है। मालती एक वैश्या है जो स्वयं अपने शोषण के जीवन से बचने की कोशिश करती है। वैश्यावृत्ति की समस्या पर प्रेमचन्द जी की भावनाऐं कोमल रही है। उपन्यास में मालती के बारे में कथन है कि मालती बाहर से तितली व भीतर से मधुमक्खी है।

प्रेमचन्द ने उपन्यास में पाश्चात्य देशों के वैवाहिक सम्बन्ध में तलाक स्वच्छन्दता विद्रोह का जो अनुकरण भारत की उच्च शिक्षित पश्चिम से प्रभावित नारी में जागृत हो रही है उसे वे चिन्ता का विषय मानते है। गोदान में तितलीनुमा सोसायटी लेडी मिस मालती ऐसी ही स्त्रियाँ है।

प्रेमचन्द ने पात्रों का चरित्र, चित्रण करने में आदर्शवाद को साथ–साथ यर्थाथ स्थिति का चित्रण किया है। इसका समर्थन करते हुए डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त लिखे है – ''वस्तुतः प्रेमचन्द आदर्शो–मुखी यर्थाथवादी रचनाकार जिन्होंने अपने राष्ट्र की प्रायः सभी समस्याओं का चित्रण पूरी सच्चाई के साथ किया है।''[7]

गोदान में धनिया को आत्मस्वाभिमानी, मुँहफट, बेबाक, निड़र, सरल, दयालु, ऊपर से कठोर, भीतर से सरल हृदय तथा शोषण के खिलाफ विद्रोह करने वाली महिला के रूप में चित्रित किया है।

धनिया आत्मस्वाभिमानी है इसका एक रूप होरी जब गांव वालों के सामने उसे मारता है तब दिखायी देता है। जब होरी उसे पीटता है तब वह कहती है – ''अपनी मेहरिया को सारे गाँव के सामने लतियाने से इसकी इज्जत नहीं जाती। यहीं तो वीरो का कर्म है। बड़ा वीर है तो किसी मर्द से लड़। जिसकी बाँह पकड़कर लाया उसे मारकर बहादुर कहलाएगा। आगे कहती है – तू समझता होगा मैं इसे रोटी कपड़ा देता हूँ। आज से अपना घर संभाल। देख तो इसकी गाँव में तेरी छाती पर मूंग दलकर रहती हूँ कि नहीं और इससे अच्छा खाऊँ, पहनूंगी। इच्छा तो देख ले।''[8]

धनिया होरी द्वारा किये गये इस अपमान को भूलती नहीं लेकिन फिर भी वह होरी का साथ नहीं छोड़ती। होरी की दो पुत्रियों सोना, रूपा के विवाह प्रसंग में प्रेमचन्द ने समाज में अनमेल विवाह जैसी बुराई पर प्रकाश डाला है। वहीं झुनिया के माध्यम से विधवा विवाह की समस्या पर।

प्रेमचन्द ने स्त्री को प्रेम की परिचायक के रूप में भी दिखाया है। झुनिया के विधवा विवाह या विधवा होते हुए प्रेम–विवाह करने पर एक तरफ से समाज के ताने तो दूसरी तरफ बाप की प्रताड़ना मिलती है। तब झुनिया को धनिया का शरण देना प्रेम या ममत्व का ही रूप है।

उपन्यास में स्त्री शोषण के कारणों में धार्मिक पाखण्डों व अंधविश्वासों को भी माना है। उपन्यास में सिलिया मातादीन से प्रेम करती है। मातादीन उससे प्रेम न करके उसे स्त्री के रूप में भोगता तो है परन्तु समाज के सामने उसे पत्नी का दर्जा नहीं देता है। मातादीन बार–बार सिलिया को प्रताड़ित करता है लेकिन सिलिया फिर भी उसे छोड़ती नहीं है। सिलिया– मातादीन के प्रसंग में लेखक ने जातिवाद को सामने रखा है। वहीं सिलिया में त्याग की भावना को आदर्शवाद का रूप दे देते है। मातादीन द्वारा सिलिया को पत्नी रूप में भोगना पुरूषों की भोगवादी प्रवृत्ति तथा समाज के सामने न अपनाना उनकी स्वार्थपरकता को दिखाना है। सिलिया में आदर्शवाद दिखाकर प्रेमचन्द जी ने बताया है कि स्त्री एक बार किसी पुरूष को अपना पति मान लेती है तब वह शोषण, अत्याचार, प्रताड़ना सहन करके भी उसका साथ नहीं छोड़ती।

सिलियाँ अपने माता–पिता के लेने आने पर भी नहीं जाती और कहती है – ''कि चाहे वह मुझे पूछे या न पूछे रहूंगी तो उसी के साथ। वह चाहे भूखा रखे, चाहे मार डाले, पर उसका साथ कभी नहीं छोड़ूँगी। उसकी सासत कराकर छोड़ दूँ? मर जाऊँगी पर हरजाई न बनूँगी।'' एक बार बाँह पकड़ ली, उसी की रहूँगी।''[9]

उपन्यास में सोना व रूपा के विवाह पर पुत्री के रूप में एक महिला का अपने माता–पिता के प्रति त्याग, बलिदान को दिखाया है। उपन्यास में अनमेल विवाह पर भी पुत्री को आदर्श रूप में दिखाया है। रूपा की शादी का एक प्रसंग – रूपा की शादी अधेड़ व्यक्ति के साथ होने पर वह खुशी–खुशी उसे पति रूप में अपना लेती है। उसकी यह भावना पति के रंग रूप या उम्र पर आश्रित नहीं थी। श्वेत परम्पराओं की तह में जो लेवल किसी भूकम्प से ही हिल सकती थी। इसकी सबसे बड़ी खुशी थी घरवालों की खुशी देखना।''

उपन्यास में गोविन्दी का चरित्र भारतीय आदर्श पत्नी के रूप में सामने आता है। गोविन्दी अपने पति खन्ना साहब द्वारा उपेक्षित व निराश है। क्योंकि वह उसमें दोष निकालता है और मालती को श्रेष्ठ बताता है। गोविन्दी पति के व्यवहार से दुःखी होकर घर छोड़कर चली जाती है। लेकिन जब फैक्ट्री में आग लगती है तब वह पति का सहारा बनती है तथा श्री मेहता के समझाने पर वह बच्चों के पास वापस लौट आती है। अंत में खन्ना अपनी गलती का पछतावा करता है और गोविन्दी से माफी मांगता है। उससे प्रेम करने लग जाता है। प्रेमचन्द ने भारतीय और पाश्चात्य सभ्यता का द्वन्द्व भी खड़ा किया है। मालती एक आधुनिक महिला डॉक्टर है जो आधुनिकता को अपनाती है लेकिन अंत में वो भी आदर्शो पर चलती है। मेहता के कथन में – ''मालती बाहर से तितली तथा अंदर से मधुमक्खी है।''[10] लेकिन उपन्यास के अंत में मेहता मालती के भक्त बन जाते हैं – ''मालती केवल रमणी नहीं है माता है और ऐसी – वैसी माता नहीं सच्चे अर्थ में देवी और माता जीवन देने वाली जो पराए बालक को भी अपना समझ सकती है।''[11]

प्रेमचन्द उपन्यास में नारी के वास्तविक रूप को दिखाते है। उनकी सहानुभूति नारी के मातृत्व रूप के साथ है। वे उसी को महत्व देते है तथा रमणी रूप की उपेक्षा करते है। उपन्यास में प्रेमचन्द ने नारी गृहस्थ जीवन का यर्थाथ रूप दिया है। उपन्यास में गृहस्थ नारियों के मनोभाव, चरित्र तथा स्वभाव को मूर्त व अमूर्त रूप में उद्धारित किया है। प्रेमचन्द ने गृहस्थ प्रेम को सर्वोपरि बताया है। आकर्षण प्रेम का वे विरोध करते है।

**निष्कर्ष** :

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि गोदान में प्रेमचन्द ने महिलाओं के आदर्श रूप को उद्धारित किया है। समाज में फैली कुरीतियों, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, प्रेम विवाह, विधवा विवाह, धार्मिक, पाखण्ड, अंधविश्वासों की

आड़ में महिलाओं का हर तरफ से होता है। भारतीय समाज में महिलाओं के त्याग, बलिदान को भी प्रेमचन्द ने आदर्श के रूप में दिखाया है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है उसमें वो ही लिखा जाता है जो तात्कालिक समाज में घटित हो रहा है। लेखक स्वयं समाज के साथ तादात्म्य स्थापित करके देखता है यही प्रेमचन्द ने किया है।

**संदर्भ** :

1. प्रेमचन्द का पुनर्मूल्यांकन, शभुनाथ सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ.सं. 26.
2. प्रेमचन्द स्मृति, श्री निवासाचार्य, पृ.सं. 223.
3. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द, पृ.सं. 63.
4. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द, पृ.सं. 369.
5. प्रेमचन्द घर में, शिवरानी देवी, आत्माराम सं. प्रकाशन, नई दिल्ली, 1956, पृ.सं. 113.
6. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द, पृ.सं. 108.
7. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त, पृ.सं. 452.
8. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द, पृ.सं. 167.
9. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द, पृ.सं. 220.
10. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द, पृ.सं. 131.
11. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द, पृ.सं. 280.